"वी.पी सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं"

भारत के सबसे निर्भीक और विश्वसनीय पत्रकार के रूप में जाने वाले पत्रकार संतोष भारतीय ने अपनी कर्म यात्रा आठवें दशक के आरंभिक वर्षों में सामाजिक परिवर्तन से जुड़े आंदोलन में भाग लेने से की थी। जे.पी का सर्वाधिक प्रेम और विस्वास संतोष भारतीय पर रहा और उन्हीं की सलाह पर संतोष भारतीय पत्रकारिता में आए। समय की पुकार थी और संतोष भारतीय ना चाहते हुए भी खुद को राजनीति में आने से रोक नहीं पाए। 1989 की 9वीं लोक सभा में संतोष भारतीय ने प्रवेश किया, जिसमें वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री थे और चंद्रशेखर, राजीव गाँधी, लालकृष्ण आडवाणी, सोमनाथ चटर्जी, एन.जी रंगा और रबी रे जैसे दिग्गज मौजूद थे।

ज़िंदगी के सफ़र की दिलचस्प घटनाएँ संतोष भारतीय ने उनकी किताब "वी.पी सिंह, चंद्रशेखर, सोनिया गाँधी और मैं" में दर्ज की हैं। हाल ही में ब्रिटेन के एक प्रकाशक ने यह किताब प्रकाशित की है जो बाज़ार में काफ़ी चर्चा में है। किताब की संपादक ने इस किताब को 'इतिहास ग्रंथ' ठीक ही कहा है क्योंकि इस किताब में वो दिलचस्प एतिहासिक घटनाएँ संतोष भारतीय ने लिखी हैं जो आज तक भारत के लोगों से अछूती रहीं, कुछ ऐसे ख़ुलासे हैं जिन्हें पढ़कर कोई भी आश्चर्यचकित हो जाएगा। जैसे एक जगह लिखा है कि **"राजीव गाँधी गुस्से में आ गए और उन्होंने टेबल पर ज़ोर से घूँसा मारा। वी.पी सिंह को लगा के रुकना बेकार है, वे नमस्ते कर वापस आ गए।** [page 81] फिर आगे संतोष भारतीय लिखते हैं कि **22 मई 1987 की उस शाम ने राजीव गाँधी के भविष्य और विश्वनाथ प्रताप सिंह के भविष्य को लिखना शुरू कर दिया था"।**

लिखा है **कि किस तरह और कब मुलायम सिंह ने जनता दल की सरकार तोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही। कब और कैसे दस हज़ार किसानों ने वी.पी सिंह के साथ सत्याग्रह कर अपनी गिरफ़्तारी दी थी।** [page 283] **राज बब्बर के सामने चिंता थी के अगले दिन स्वागत के लिए लोग कहाँ से आएँगे? फिर उन्होंने बाला साहिब ठाकरे से किस शर्त पर मदद ली थी।** [page 94] यह सब घटनाएँ लिखते हुए एक घटना का ज़िक्र है जिससे अभिनेत्री रेखा से उनकी अंतरंगता का पता चलता है, लिखते हैं कि **"अगले दिन मैं ताज गया तो पाँच मिनट के अंदर रेखा जी नीचे आ गईं और मेरी फ़ीएट कार UHF-1 में बैठी और हमारी गाड़ी दिल्ली की सड़कों पर चल पड़ी"** [page 66)

इस किताब में जो सबसे ज़्यादा चौकाने वाली घटना लिखी है, संतोष जी लिखते हैं कि **"वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री बन गए और राजीव गाँधी भूतपूर्व प्रधानमंत्री हो गए। वे 10 जनपथ में रहने आ गए थे। एक दिन अमिताभ बच्चन, राजीव गाँधी से मिलने आए। दस मिनट के बाद जब वे चले गए तो राजीव गाँधी ने कहा, " ही इज़ अ स्नेक" अर्थात 'यह साँप है।' जब राजीव गाँधी ने ये कहा था तब वहाँ एक पत्रकार मौजूद थे जो उन दिनों राजीव गाँधी के आस पास ज़्यादा देखे जाते थे।** [page 57]

इस किताब में राजनेताओं के संतुलित व्यक्तित्व और उनकी नीतियों और कूटनीतियों के समीकरणों के खेल को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से लिखा गया है। जैसे एक पन्ने पर लिखा है कि **"चंद्रशेखर ने कभी वी.पी सिंह को नेता नहीं माना बल्कि एक रणनीति के तहत चुनाव जीतने के लिए उनका इस्तेमाल किया था"।** [page 255] एक जगह लिखा है की **"उनकी सभाओं में साँप**

छोड़े जाने लगे थे, रेल्वे स्टेशन पर उनको धक्का देने की कोशिश की गई थी" [page 135]. एक चैप्टर का शीर्षक **"बोफ़ोर्स"** है, लिखा है **"दरअसल प्रधानमंत्री के घर में लगातार जाने वाले एक इटालियन ओत्तवियो कवात्रोचि इस सारे ड्रामे के निर्देशक थे, राजीव गाँधी को पता ही नहीं चला और उनके घर और दफ़्तर का बोफ़ोर्स सौदे में इस्तेमाल हो गया"** । [page 69] इस किताब में वो **सही घटना पहली बार देश को मालूम हो सकेगी के मनमोहन सिंह आख़िर प्रधान मंत्री कैसे बने।** [page 470]

इतिहास की बात हो और उस में आर.एस.एस का ज़िक्र ना हो एसा हो ही नहीं सकता। एक घटना जिसमें **चंद्रशखर और अटल बिहारी वाजपाई की बातचीत का ज़िक्र है, लिखा है कि जहाँ चंद्रशखर ने अटल जी कहा कि "आप भी भाजपा छोड़ें, मैं भी जानता पार्टी छोड़ता हूँ और शरद पवार से कहते हैं कि वे काँग्रेस छोड़ें और हम तीनो देश में घूमें और जानता को एक नए राजनीतिक बदलाव के लिए तैयार करें. इस पर अटल जी बोले थे कि "चंद्रशेखर आप बिलकुल सही कह रहे हैं लेकिन आप आर.एस.एस को नहीं जानते, मैं उन्हें जीते जी नहीं त्याग सकता, अगर मैंने आर.एस.एस से अलग होकर आपका साथ दिया तो ये लोग मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे"।** [page 435]

एक और अचंभित करने वाली घटना लिखी है कि **क्यों और कैसे सोनिया गाँधी ने अमिताभ बच्चन से दूरियाँ बना ली थी, लिखा है कि राजीव गाँधी के निधन के बाद "एक दिन सोनिया गाँधी ने अमिताभ बच्चन से कहा कि उन्हें राहुल की फ़ीस की बहुत चिंता है और क्या वे सिर्फ़ फ़ीस का इंतज़ाम कर सकते हैं? इस पर अमिताभ बच्चन ने जवाब दिया " पैसे तो ललित सूरी और सतीश शर्मा ने गड़बड़ कर दिए, कुछ है ही नहीं, लेकिन मैं कुछ करूँगा।" उन्होंने दो दिन बाद सोनिया गाँधी के पास एक हज़ार डॉलर का चेक भिजवा दिया। सोनिया गाँधी ने वह चेक वापस अमिताभ को लौटा दिया । सोनिया गाँधी इस घटना को कभी भूल नहीं पाईं और इसे अपना अपमान मान उन्होंने अमिताभ बच्चन को हमेशा के लिए अपनी जिंदगी से निकाल दिया।** [page 59]

उद्योग जगत के बारे में कुछ ख़ुलासे करते हुए संतोष भारतीय लिखते हैं **कि "एक घटना ने धीरूभाई को वी.पी सिंह का सबसे बड़ा दुश्मन बना दिया था"** वो क्या घटना थी यह किताब में बड़े ही रोचक शैली में लिखा है। [page 53]

संतोष भारतीय लिखते हैं कि **इस किताब के हर पात्र से जुड़ी यादें महज़ यादें नहीं बल्कि ये भारत के उस राजनीतिक काल खंड का दस्तावेज़ हैं जो सबसे ज़्यादा हलचल भरे रहे हैं। वे लिखते हैं वी.पी सिंह, चंद्रशेखर और सोनिया गाँधी ये तीनो व्यक्तित्व उस सम्मान से वंचित रहे, जो सम्मान, उन्हें मिलना चाहिए था। संतोष भारतीय लिखते हैं कि सोनिया गाँधी की तारीफ़ करनी चाहिए के प्रधान मंत्री बनने का लोभ भी उन्हें ना लुभा सका और उनकी समझदारी ने यूपीए को दस साल चला दिया। वे चाहतीं तो नरसिम्हा राव की जगह ख़ुद प्रधान मंत्री बन सकती थीं।** [page 471]

इंदिरा गाँधी, मोरराजी देसाई, सत्यपाल मलिक, प्रणव मुखर्जी, महंत अवैद्यनाथ, स्वामी चिन्मयानंद, कमाल मोरारका, डॉक्टर मंज़ूर आलम, सोमपल शास्त्री, देवीलाल, आडवाणी, शत्रुघन सिन्हा, आरिफ़ मोहम्मद ख़ान, एन.टी रामा राव, रामविलास पासवान, सुनील शास्त्री, मेनका गाँधी, कांशीराम, शरतचंद्र सिन्हा, रामकृष्ण हेगड़े, अरुण नेहरू, अहमद पटेल, संजय सिंह, अजित सिंह, नारायण दत्त तिवारी, अशोक सिंघल, फ़ारूख अब्दुल्ला, नवाज़ शरीफ़, डॉक्टर मनमोहन सिंह और जयप्रकाश नारायण जैसे विशाल व्यक्तित्व वाले नेता और अभिनेताओं के राजनीतिक सफ़र का वर्णन दर्ज है। संपादक ने ख़ूब लिखा है के इस किताब को पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे के आप एक वक़्त से गुज़र कर आए हैं ।